

पञ्चमहाकाव्य तथा भारतीयज्ञानपरम्परा

(The Five Mahākāvya and the Indian Knowledge Tradition)

डॉ. राकेश कुमार मिश्र

सहायकाचार्य

सरकारी महिला महाविद्यालय, पुरी

Abstract

The explores the profound relationship between classical Sanskrit literature and India's rich knowledge heritage. The study categorizes poetry into two primary components: the narrative structure, supported by elements such as flaws, qualities, literary devices, and aesthetic essence (rasa), and the poet's intent, which reflects the socio-cultural environment of the time.

By examining the five great Sanskrit epics—Rāghuvamśa, Kumārasambhavam, Kirātārjunīya, Śisupālavadam, and Naiṣadhīyacaritam—the paper highlights how these works encapsulate core elements of Indian philosophy, science, Ayurveda, military science, sociology, political science, economics, ethics, and practical life education. The vivid depiction of themes ranging from governance principles, culinary arts, and warfare to spiritual practices demonstrates the epics' enduring relevance in contemporary society.

The text illustrates how poets like Kalidasa, Bharavi, Magha, and Sriharsha infused their works with intricate knowledge about Indian traditions, philosophies, and scientific insights. It underscores the role of these literary masterpieces as invaluable treasures of Sanskrit literature, reflecting the timeless wisdom of India's intellectual heritage.

Key words

Dōṣa Sāhitya, Guṇa Sāhitya, Āyurveda, Kāma Śāstra, Nāiṣadhīya Caritam

सार

काव्य के मुख्यतः दो प्रमुख भाग किये जा सकते हैं - 1.कथावस्तु: काव्य का प्रथमभाग कथावस्तु होता है, जिसके निम्नोक्त चार स्तम्भ हैं -

- 1.दोषसाहित्य
- 2.गुणसाहित्य
- 3.अलङ्कार तथा
- 4.रस

कवि का उद्देश्य

काव्य में कवि का उद्देश्य द्वितीय प्रमुख भाग होता है। कवि जिस काव्य का प्रणयन करता उसमें तात्कालिक समाज संस्कृति, वातावरण, परम्परा इत्यादि का चित्रण करता है। जैसे महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में भारतीय संस्कृति के प्राणभूत रघु-कौत्स संवाद का उल्लेख किया है। वैसे ही वर्तन्तु से कौत्स के शिक्षा लेने का वर्णन विशेष रूप से द्रष्टव्य है। वस्तुतः किसी भी कवि का प्रमुख उद्देश्य उसके देश व समाज की अस्मिता को उजागर करना होता है।

भारत की महनीय ज्ञान परम्परा ने पूरे मानवजाति को सृष्टि के आरम्भ से ही दिग्दर्शन प्रदान किया है। लौकिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख पञ्चमहाकाव्यों रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवधम् तथा नैषधीयचरितं में भारतीय ज्ञानपरम्परा के मूल तत्त्वों का दर्शन होता है, जो आज के समाज के लिए अत्यन्त प्रासङ्गिक हैं। इनमें भारतीय दर्शन के मूल तत्त्वों का काव्य की शैली जो वर्णन प्राप्त होता है वह बड़ा ही मनोरम है। इन पञ्चमहाकाव्यों में विज्ञान, आयुर्वेद, धनुर्वेद, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, आचारशिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा तथा प्रायः मानवजीवन के सभी पक्षों से संबंधित विषयों का कान्तासम्मित शैली में अत्यंत हृदयस्पर्शी उल्लेख प्राप्त होता है। ये पञ्चमहाकाव्य लौकिक संस्कृत साहित्य के अमूल्य निधि हैं। संस्कृत साहित्य की ख्याति इन्हीं पञ्चरत्नों से है।

शब्द कुञ्जिका-

मडुक, काहल, पदलालित्य, पाकशास्त्र, अश्वशास्त्र, गजशास्त्र, युद्धविद्या इत्यादि।

नैषधीयचरितं महाकाव्य (1/17) में कवि श्रीहर्ष ने घोड़ों की पहचान करने की विशेष विधि का वर्णन किया है -

अजस्रमभ्यासमुपेयुषा समं

मुदैव देवः कविना बुधेन च।

दधौ पटीयान्समयं नयन्नयं

दिनेश्वरश्रीरुदयं दिने दिने ॥

वही नल-दमयन्ती के विवाह के प्रसंग में कवि ने तात्कालीन पाक विद्या का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। भारतीय संस्कृति में भोजन बनाने की प्राचीन वैज्ञानिक विधि और पाकशास्त्र से जुड़ा प्रसिद्ध ग्रंथ पाकदर्पण (Pakadarpanam) राजा नल की ही रचना माना जाता है, जिसमें विभिन्न व्यंजनों, मसालों और उनके गुणों का सूक्ष्म विवरण मिलता है। भारतीय दर्शन शास्त्र के गूढ़ रहस्यों को कविता या काव्य के पद्यों में पिरोकर जिस प्रकार कवि हर्ष ने प्रस्तुत किया है, वह बेहद प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीय के द्वितीय सर्ग (2/38) में बृहस्पति के नीतितत्त्व, चाणक्य नीतितत्त्व का जो वर्णन किया है वह बहुत ही प्रासङ्गिक प्रतीत होता है। यथा -

समवृत्तिरूपैति मार्दवं, समये यश्च तनोति तिग्मताम्।

अधितिष्ठति लोकमोजसा, स विवस्वानिव मेदिनीपतिः ॥

भारतीय संस्कृति में गो सेवा का विशेष महत्त्व है, जिसका सुन्दर उदाहरण रघुवंश महाकाव्य (2/6) में प्राप्त होता है -

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः।

जलाभिलाषी जलमाददानां छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥

दिलीपो को गो सेवा से पुत्र की प्राप्ति, तथा रघु को नन्दिनी के गोमूत्र से दिव्य दृष्टि का प्राप्त होना रघुवंश (3/41) में विशेष रूप से वर्णित है।

तदङ्कनिस्यन्दनजलेन लोचने प्रमृज्य पुण्येन पुरस्कृतः सताम्।

अतीन्द्रियेष्वप्युपपन्नदर्शनो बभूव भावेषु दिलीपनन्दनः ॥

कुमारसंभवम् (1/1) में कालिदास के द्वारा हिमालय का सुन्दर वर्णन भारत के भौगोलिक स्थिति का परिचायक है -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥

वही पञ्चम सर्ग मे (कुमार. 5/86) कर्मकाण्ड विधान का उल्लेख तथा पार्वती की तपस्या तात्कालीन समाज के श्रद्धा तथा भक्ति भाव का परिचायक है –

अद्यप्रभृत्यवनताङ्गि तवास्मि दासः क्रीतस्तपोभिरिति वादिनि चन्द्रमौलौ ।

अह्नां सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते ॥

विवाहों में ब्राह्म विवाह की श्रेष्ठता तथा तात्कालीन समाज के द्वारा उसको विशेषप्रकार की स्वीकृति भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का उदाहरण है, जिसका प्रमाण हमें कुमारसंभवम् महाकाव्य में मिलता है। किरातार्जुनीय (2/30) में वर्णित सोच-विचारकर कार्य करने की विधि आज के समाज के लिए भी प्रासङ्गिक है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।

वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।

शिशुपालवधम् महाकाव्य (शिशु 3/76) में महाकवि माघ ने तात्कालीन मड्डुक तथा काहल जैसे वाद्ययन्त्रों का उल्लेख किया है। माघ ने अपने महाकाव्य में अश्वशास्त्र तथा गजशास्त्र का विशेष रूप से वर्णन किया है। उन्होंने विभिन्न द्वीपों पर अपना अपना सामान बँचकर नौकाओं में धन लाद- लाद कर स्वदेश लौटने वाले वणिक् जनों का उल्लेख भी किया है –

विक्रीय दिश्यानि धनान्युरूणि द्वैष्यान्सावुत्तमलाभभाजः ।

तरीषु तत्र्यमफल्यु भाण्डं सांयात्रिकानावपतोऽभ्यनन्दत् ॥

वही (शिशु. 3/78) पदलालित्य का एक उत्तम उदाहरण द्रष्टव्य है -

तमागतं वीक्ष्य युगान्तबन्धुमुत्सङ्गशय्याशयमुम्बराशिः ।

प्रत्युजगामेवगुरुप्रमोदप्रसारि ओत्तुङ्गतरङ्गबाहुः ॥

शिशुपालवधम् महाकाव्य में मुख्य रूप से युद्ध विद्या के अनेक उदाहरण द्रष्टव्य हैं। इस प्रकार पञ्चमहाकाव्यों में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनेक रूपों का दर्शन होता है, जो वर्तमान समाज के लिए अत्यन्त प्रासङ्गिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

- आचार्य श्रीनिवास, (2013). किरातार्जुनीयं महाकाव्यम् सम्पूर्णम् (हिन्दी संस्करण), भारतीय विद्याप्रकाशनम्, दिल्ली
उपाध्याय, बलदेव । (2001). संस्कृत साहित्य का इतिहास. शारदा निकेतन 5 बी, कस्तूरबा नगर, सिगरा वाराणसी ।
त्रिपाठी कृष्णमणि, (2010). रघुवंशम् , चौखम्बा सुरभारती प्रकाशनम्, वाराणसी ।
त्रिपाठी, राधावल्ल । (चतुर्थ संस्करण 2013 ई.) संस्कृत साहित्य का इतिहास. विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी ।
त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (2017). कालिदास ग्रन्थावली. चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी ।
द्विवेदी, रेवा प्रसाद (1986). कालिदास ग्रन्थावली. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी ।
पंत मोहनदेव, (1979). नैषधीयचरितम् , मोतीलाल बनारसीदास, बनारस
मालवीय सुधाकरः, (2017). कुमारसम्भवं महाकाव्यम्, चौखम्बा सुरदास अकादमी
शर्मा, उमाशंकर । (2016). संस्कृत साहित्य का इतिहास. चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी ।
शुक्ला गणेशदत्तशास्त्री (2004-5). शिशुपालवधम् महाकाव्यम्. शारदा संस्कृत संस्थान्, वाराणसी-221002